ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

किराना दुकान से सिलाई तक:
अनीता देवी की
आत्मनिर्भरता की प्रेरक कहानी
(पृष्ठ – 02)

संघर्ष से समृद्धि तक:
एसजेवाई से बदली ज़िंदगी
(पृष्ठ – 03)

ई–रिक्शा और
किराना दुकान से बदली ज़िंदगी
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – जनवरी 2026 ।। अंक – 54

सतत् जीविकोपार्जन योजनाः नई उद्यमिता की नई गाथा लिखती पहल

बिहार के ग्रामीण विकास की यात्रा में सतत् जीविकोपार्जन योजना एक ऐसी परिवर्तनकारी पहल के रूप में उभरी है, जिसने गरीबी से जूझ रहे परिवारों के जीवन को नई दिशा दी है। यह योजना केवल आर्थिक सहायता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मनिर्भरता, सम्मान और स्थायित्व की ओर बढ़ने का एक समग्र मार्ग प्रस्तुत करती है। जिन परिवारों के पास न तो स्थायी आय का स्रोत था और न ही भविष्य को लेकर कोई स्पष्ट उम्मीद, आज वही परिवार इस योजना के सहारे अपने पैरों पर खड़े हो रहे हैं और सम्मानपूर्वक जीवन जी रहे हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना का मूल उद्देश्य राज्य के अत्यंत निर्धन, वंचित और हाशिये पर खड़े परिवारों को चिन्हित कर उन्हें सतत् जीविकोपार्जन गतिविधि के साधनों से जोड़ना है। इस योजना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें परिवारों को केवल संसाधन उपलब्ध नही कराया जाता है, बल्कि एक निश्चित प्रक्रिया के तहत उन्हें चरणबद्ध रूप से सशक्त किया जाता है। शुरुआत में परिवारों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का आकलन किया जाता है, इसके बाद उनकी रुचि, क्षमता और स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार आजीविका का चयन किया जाता है। इस प्रक्रिया से यह सुनिश्चित होता है कि चुना गया व्यवसाय लंबे समय तक चले और परिवार को नियमित आय देता रहे।

योजना के अंतर्गत बकरी पालन, गाय–भैंस पालन, मुर्गी पालन, सब्जी उत्पादन, किराना दुकान, हस्तशिल्प, खाद्य प्रसंस्करण जैसे अनेक जीविकोपार्जन विकल्प उपलब्ध कराए जाते हैं। खास बात यह है कि ये सभी गतिविधियाँ स्थानीय संसाधनों और बाजार की मांग से जुड़ी होती हैं। इससे न केवल उत्पादन आसान होता है, बल्कि उत्पादों की बिक्री भी सुनिश्चित रहती है। यही कारण है कि सतत् जीविकोपार्जन योजना अस्थायी राहत नहीं, बल्कि स्थायी समाधान का माध्यम बनती जा रही है।

इस योजना का एक मजबूत पक्ष है क्षमतावर्धन। लाभार्थियों को व्यवसाय से जुड़े तकनीकी प्रशिक्षण के साथ–साथ बचत की आदत, खर्च का सही प्रबंधन, ऋण का उपयोग और भविष्य की योजना बनाने की जानकारी दी जाती है। समूह बैठकों, प्रशिक्षण सत्रों और नियमित फॉलो–अप के माध्यम से परिवारों को निरंतर मार्गदर्शन मिलता है। धीरे–धीरे वह अपने व्यवसाय को समझने लगते हैं, जोखिमों का सामना करना सीखते हैं और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं। कई स्थानों पर यह देखा गया है कि योजना से जुड़े परिवार कुछ वर्षों के भीतर दूसरों को भी रोजगार उपलब्ध कराने लगे हैं।

महिला सशक्तीकरण के दृष्टिकोण से सतत् जीविकोपार्जन योजना की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब महिलाएँ आय अर्जित करने लगती हैं, तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और परिवार में उनकी भागीदारी मजबूत होती है। वह बच्चों की शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य और घरेलू निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाने लगती हैं। इससे परिवार के भीतर संतुलन बनता है और समाज में भी महिलाओं की स्थिति में सकारात्मक बदलाव दिखाई देता है। कई महिलाएं आज स्वयं सहायता समूहों और ग्राम संगठनों में नेतृत्व की भूमिका निभा रही हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना ग्रामीण क्षेत्रों में नई उद्यमिता को बढ़ावा देने का एक सशक्त मंच बन चुकी है। यह योजना यह स्पष्ट संदेश देती है कि उद्यमिता केवल बड़े शहरों या उच्च शिक्षा तक सीमित नहीं है। सही मार्गदर्शन, निरंतर सहयोग और भरोसे के साथ ग्रामीण गरीब परिवार भी सफल उद्यमी बन सकते हैं। आज योजना से जुड़े कई लाभार्थी अपने उत्पाद स्थानीय हाट–बाजारों से आगे बढ़कर मेलों और शहरी बाजारों तक पहुँचा रहे हैं।

बिहार जैसे राज्य में, जहाँ आज भी बड़ी आबादी सीमित संसाधनों पर निर्भर है, सतत् जीविकोपार्जन योजना आशा की एक मजबूत किरण के रूप में सामने आई है। यह योजना न केवल निर्धन परिवारों के वर्तमान जरूरतों को पूरा कर रही है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी बेहतर, सुरक्षित और आत्मनिर्भर भविष्य की नींव रख रही है। नि:संदेह, सतत् जीविकोपार्जन योजना नई उद्यमिता की ऐसी गाथा लिख रही है, जिसमें मेहनत, आत्मविश्वास और सामूहिक सहयोग से बदलाव की कहानी गढ़ी जा रही है।

किराना दुकान से सिलाई तक: अनीता देवी की आत्मनिर्भरता की प्रेरक कहानी

गया जिले के आमस प्रखंड अंतर्गत बड़की चिल्मी पंचायत के कुरवा गाँव की निवासी अनीता देवी शंकर जीविका स्वयं सहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं। वह रौशनी जीविका महिला ग्राम संगठन एवं अवतार जीविका संकुल स्तरीय संघ से भी जुड़ी हुई हैं। तीन सदस्यीय परिवार की जिम्मेदारी निभा रहीं अनीता देवी आज आत्मनिर्भर महिला उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बना चुकी हैं।

अनीता देवी वर्ष 2011 में शंकर जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं थी । समूह से जुड़ने के पहले उनका जीवन सीमित संसाधनों और अनिश्चित आय के बीच गुजर रहा था। परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करना उनके लिए आसान नहीं था। जीविका से जुड़ने के बाद उन्हें न केवल बचत और वित्तीय अनुशासन की समझ मिली, बल्कि सरकारी योजनाओं से जुड़ने का अवसर भी प्राप्त हुआ।

जीविका के माध्यम से अनीता देवी को सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया। इस योजना के अंतर्गत उन्होंने किराना दुकान शुरू की, जिससे उनकी आय में स्थिरता आने लगी और परिवार की आर्थिक स्थिति में धीरे–धीरे सुधार हुआ। हाल ही में उन्हें मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत 10,000 रुपये भी प्राप्त हुई। इस राशि की सहायता से उन्होंने एक सिलाई मशीन खरीदी है।

दिनांक 28 नवम्बर 2025 को अनीता देवी ने कपड़े सिलाई कार्य की शुरुआत की। इस नए प्रयास से उनकी आय के स्रोत बढ़े है। सिलाई कार्य से होने वाली आय से वह बच्चों की शिक्षा, पोषण और घरेलू जरूरतों को बेहतर ढंग से पूरा कर पा रही हैं। अब उनका परिवार पहले की तुलना में सम्मानपूर्ण जीवन जी रहा है।

अनीता देवी की सफलता की कहानी यह दर्शाती है कि समूह का सहयोग और सरकारी योजनाओं का लाभ मिलने से ग्रामीण महिलाएँ भी आत्मनिर्भर बन सकती हैं। उनका संघर्ष और संकल्प आज उनके गाँव की अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा बन चुका है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से बदली ज़िंदगी: कुमारी हेम्ब्रम की उद्यमिता की कहानी

किशनगंज जिले के दिघलबैंक प्रखंड अंतर्गत टंग–टंगी गाँव की निवासी कुमारी हेम्ब्रम, करिश्मा जीविका स्वयं सहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं। वह शबनम जीविका महिला ग्राम संगठन एवं चाँदनी संकुल स्तरीय संघ से जुड़ी हुई हैं। आज वह सतत् जीविकोपार्जन योजना के माध्यम से आत्मनिर्भरता की राह पर आगे बढ़ रही हैं।

कुमारी हेम्ब्रम के जीवन में उस समय गहरा संकट आया, जब उनके पति भेना पोद्दार का असमय निधन हो गया। पति ही परिवार के एकमात्र कमाने वाले सदस्य थे। उनके निधन के बाद तीन बेटियों और दो बेटों के भरण–पोषण की पूरी जिम्मेदारी कुमारी हेम्ब्रम के कंधों पर आ गई। अत्यंत निर्धन परिवार से होने के कारण उनके सामने जीविकोपार्जन का कोई स्थायी साधन नहीं था। कुछ समय तक उन्होंने दूसरों के खेतों में मजदूरी कर किसी तरह परिवार का गुजारा किया ।

इसी दौरान शबनम जीविका महिला ग्राम संगठन के माध्यम से कुमारी हेम्ब्रम को सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया। योजना के तहत मिली सहायता राशि से उन्होंने अपने गाँव में मनिहारी की दुकान शुरू की। यह उनके लिए एक बड़ा कदम था, क्योंकि पहली बार उन्हें अपना खुद का व्यवसाय करने का अवसर मिला। दुकान से नियमित आमदनी होने लगी जिससे घर की आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगा।

मनिहारी दुकान से हो रही आय को देखते हुए कुमारी हेम्ब्रम ने बकरी पालन का कार्य भी शुरू किया। इससे उनकी आय के स्रोत बढ़ी है। वर्तमान में उन्हें दुकान से प्रतिमाह लगभग 9,000 से 10,000 रुपये तक की आय हो जाती है। इससे वह बच्चों के भोजन, शिक्षा और दैनिक जरूरतों को बेहतर ढंग से पूरा कर पा रही हैं।

कुमारी हेम्ब्रम बताती हैं कि सतत् जीविकोपार्जन योजना ने उन्हें स्वरोजगार शुरू करने के लिए जरूरी वित्तीय सहयोग और आत्मविश्वास दिया। आज वह अपने परिवार का भरण–पोषण सम्मानपूर्वक कर रही हैं।

संघर्ष से स्वावलंबन तक: एसजेवाई से बदली लेलम देवी की ज़िंदगी

दरभंगा जिले के बेनीपुर प्रखंड अंतर्गत तरौनी ग्राम की निवासी लेलम देवी एक साधारण श्रमिक परिवार से आती हैं। उनके पति रामबिलाश कामती मजदूरी का कार्य करते हैं, लेकिन काम की अनियमितता और सीमित आमदनी के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति स्थिर नहीं थी। स्वयं लेलम देवी भी मजदूरी करती थीं, फिर भी रोज़मर्रा की जरूरतें पूरी करना कठिन होता था।

आर्थिक कठिनाइयों के बीच लेलम देवी ने बदलाव का साहसिक निर्णय लिया और जीविका से जुड़ीं। वह रीता जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य बनीं । समूह के नियमित बैठकों, बचत और आपसी सहयोग ने उन्हें आत्मविश्वास दिया और आगे बढ़ने की सोच विकसित की।

सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत लेलम देवी को चरणबद्ध रूप से वित्तीय सहायता प्रदान की गई। उन्हें विशेष निवेश निधि के रूप में 10,000 रुपये, जीविकोपार्जन निवेश निधि से 20,000 रुपये की परिसंपत्ति तथा जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के तहत प्रति माह 1000 रूपये के हिसाब से सात माह में 7,000 रुपये प्राप्त हुए। इस प्रकार कुल 37,000 रुपये की सहायता मिली। इसके अतिरिक्त मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के अंतर्गत उन्हें 10,000 रुपये की राशि भी प्रदान की गयी।

प्राप्त राशि का सही उपयोग करते हुए लेलम देवी ने अपने गाँव में चाय–नाश्ता की दुकान शुरू की। उन्होंने बर्तन, गैस चूल्हा, कच्चा माल और ग्राहकों को बैठने की व्यवस्था की। शुरुआत में कठिनाइयाँ आईं, लेकिन साफ–सफाई, समय की पाबंदी और मधुर व्यवहार के कारण उनकी दुकान जल्द ही गाँव में लोकप्रिय हो गई।

आज इस दुकान से होने वाली नियमित आय ने उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है। गाँव में उन्हें एक मेहनती और आत्मनिर्भर महिला के रूप में पहचाना जाने लगा है। लेलम देवी की कहानी यह साबित करती है कि सही मार्गदर्शन और सरकारी योजनाओं के सहयोग से महिलाएँ संघर्ष से निकलकर स्वावलंबन की राह पर आगे बढ़ सकती हैं।

संघर्ष से समृद्धि तक: एसजेवाई से बदली ज़िंदगी

ललिता देवी, पत्नी स्वर्गीय दामोदर सिंह, ग्राम घुठिया, जिला बांका की निवासी हैं। एक साधारण और गरीब परिवार से आने वाली ललिता देवी का जीवन वर्ष 2017 में उस समय पूरी तरह बदल गया, जब रोज़गार की तलाश में पुणे गए उनके पति की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। पति के असमय निधन ने उन्हें गहरे आर्थिक संकट में डाल दिया। तीन बच्चों की जिम्मेदारी, सीमित आय के साधन और सामाजिक असुरक्षा ने उनके सामने कई चुनौतियाँ खड़ी कर दीं।

जीवन यापन के लिए ललिता देवी और उनकी बेटी को दूसरों के घरों में काम करना पड़ा। वर्ष 2018 में वे जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं। वह समूह से ऋण लेकर छोटी बेटी की शादी की। हालांकि इससे कर्ज बढ़ा, लेकिन जीविका से जुड़ाव ने उनके भीतर आगे बढ़ने का आत्मविश्वास पैदा किया। वर्ष 2021 में उनकी दयनीय स्थिति को देखते हुए ज्वाला जीविका महिला ग्राम संगठन के द्वारा उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत किया गया ।

सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत उन्हें विशेष निवेश निधि के अंतर्गत 10000 रुपये एवं जीविकोपार्जन निवेश निधि के रूप में 20,000 रुपये की परिसंपत्ति मिली। इस सहयोग राशि से उन्होंने किराना दुकान शुरू की। इसके अलावा जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रूप में प्रति माह 1000 रुपये के हिसाब से 7000 रुपये उन्हें दिया गया। दुकान से धीरे–धीरे उनकी आमदनी बढ़ने लगी। वर्तमान में उनकी मासिक आय 7500 से 8500 रुपये है। दुकान की आय में बचत कर उन्होंने बकरी और गाय पालन भी शुरू किया, जिससे आय के अतिरिक्त स्रोत विकसित हुए है।

आज ललिता देवी किराना दुकान, पशुपालन और खेती के जरिए आत्मनिर्भर जीवन जी रही हैं। वह बच्चों को शिक्षा भी दिलवा रही है। सतत् जीविकोपार्जन योजना ने न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत किया, बल्कि उन्हें सम्मान और आत्मविश्वास के साथ जीने की नई राह भी दिखाई है।

ई–रिक्शा और किराना दुकान से बदली ज़िंदगी: सतत् जीविकोपार्जन योजना से सशक्त बनी सुनीता देवी

बक्सर जिले के चौसा प्रखंड अंतर्गत पावनी ग्राम की निवासी सुनीता देवी सतत् जीविकोपार्जन योजना की लाभार्थी हैं। वह कृष्णा जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं, जो महावीर जीविका महिला ग्राम संगठन और आदर्श जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ से संबद्ध है। आज सुनीता देवी ई–रिक्शा और किराना दुकान संचालन के माध्यम से आत्मनिर्भर जीवन जी रही हैं, जबकि कभी उनका परिवार अत्यंत कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा था।

सुनीता देवी का विवाह वर्ष 2008 में पावनी गाँव के अमरनाथ राम से हुआ था । पति–पत्नी दोनों ही लगभग 70 प्रतिशत शारीरिक रूप से दिव्यांग हैं। दिव्यांगता के कारण नियमित रोजगार मिलना उनके लिए बेहद कठिन था। उनके परिवार में पति के अलावा चार बच्चे हैं और सीमित आय के कारण गरीबी, खराब स्वास्थ्य, पोषण की कमी और सामाजिक भेदभाव जैसी समस्याएँ उनके जीवन का हिस्सा बन चुकी थीं। बच्चों की शिक्षा तक भी उनकी पहुँच सीमित थी, जिससे भविष्य को लेकर चिंता बनी रहती थी। सुनीता देवी के पति मोची का काम करते थे, जिससे बहुत मुश्किल से घर का खर्च चल पाता था।

मई 2020 में चौसा प्रखंड में सतत् जीविकोपार्जन योजना की गतिविधि की शुरुआत हुई। इसी दौरान महावीर जीविका महिला ग्राम संगठन के माध्यम से सामुदायिक संसाधन सेवी दल के द्वारा सुनीता देवी का चयन इस योजना के तहत किया गया। इसके बाद मास्टर संसाधन सेवी द्वारा उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना की विस्तृत जानकारी दी गई और क्षमता संवर्धन की प्रक्रिया शुरू की गई। आवश्यक प्रशिक्षण और मार्गदर्शन के बाद उनके लिए सूक्ष्म आजीविका योजना तैयार की गई, ताकि वह स्थायी आय का साधन विकसित कर सकें।

सुनीता देवी ने ग्राम संगठन के समक्ष किराना दुकान शुरू करने की इच्छा व्यक्त की। इसके लिए योजना के तहत उन्हें विशेष निवेश निधि के अंतर्गत 10,000 रुपये एवं जीविकोपार्जन निवेश निधि के अंतर्गत 20,000 रुपये की परिसंपत्ति प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि के रूप में प्रति माह 1000 रुपये के हिसाब से 7,000 रुपये दिए गए। आत्मविश्वास निर्माण एवं उद्यम विकास हेतु उन्हें प्रशिक्षण भी दिया गया, ताकि व्यवसाय संचालन, खरीद–बिक्री और आय–व्यय प्रबंधन की समझ विकसित हो सके।

प्रशिक्षण और सहयोग के परिणामस्वरूप सुनीता देवी ने सफलतापूर्वक किराना दुकान शुरू की। धीरे–धीरे दुकान से नियमित आय होने लगी, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार आया। बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य पर ध्यान देना संभव हुआ और घर में स्थिरता आने लगी।

वर्ष 2025 में सतत् जीविकोपार्जन योजना की तीसरी एवं अंतिम किस्त के तहत ग्राम संगठन ने सुनीता देवी को वित्तीय सहायता प्रदान की, जिससे उन्होंने ई–रिक्शा खरीदी। ई–रिक्शा मिलने से उनके परिवार की आय में और वृद्धि हुई। आवश्यकता के अनुसार ई–रिक्शा सुनीता देवी और उनके पति दोनों ही चलाते हैं, जिससे रोजगार के अवसर बढ़े और परिवार समाज की मुख्य धारा से जुड़ सका।

आज सुनीता देवी की मासिक आय लगभग 10 हजार रुपये है। आय बढ़ने के साथ–साथ परिवार की पोषण स्थिति, स्वास्थ्य और आत्मविश्वास में भी सकारात्मक बदलाव आया है। वह अपने गाँव की कई महिलाओं के लिए प्रेरणा बन चुकी हैं। उन्हें ई–रिक्शा चलाते देख अन्य महिलाओं में भी यह विश्वास जगा है कि कोई भी काम छोटा नहीं होता और सही अवसर व सहयोग से महिलाएँ हर क्षेत्र में आगे बढ़ सकती हैं।

सुनीता देवी जीविका के प्रति आभार व्यक्त करती हैं। उनका कहना है कि सतत् जीविकोपार्जन योजना जैसी पहलें न केवल महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बना रही हैं, बल्कि गरीब और वंचित परिवारों को सम्मान के साथ जीवन जीने का अवसर भी प्रदान कर रही हैं। उनकी कहानी इस बात का प्रमाण है

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार